संपादकीय

आज पूरा विश्व कोविड-19 महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी के प्रकोप से विश्व में लॉकडाउन के साथ आर्थिक, औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं धार्मिक प्रक्रियाएँ रुक गई हैं। किंतु अब सरकारों द्वारा कोविड-19 महामारी पर नियंत्रण करने के प्रयासों के साथ धीरे-धीरे अनलॉक की प्रक्रिया प्रारंभ होने लगी है। अब लोग अपने दैनिक कार्यों हेतु घर से बाहर निकलने लगे हैं। लेकिन इस महामारी से बचने के लिए मुँह पर मास्क लगाना, सामाजिक (भौतिक) दूरी रखना एवं बार-बार हाथ धोना या सैनिटाइज़र का प्रयोग करना आवश्यक है। हमारे देश में भी अनलॉक के तीन चरण लागू हो गए हैं, लेकिन अभी भी विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों को खोलने की अनुमति प्राप्त नहीं हुई है। विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा में बाधा उत्पन्न न हो, इसलिए सरकारों एवं विद्यालयों द्वारा बच्चों की औपचारिक शिक्षा निरंतर जारी रखने के लिए विभिन्न डिजिटल माध्यमों से ऑनलाइन कक्षाएँ एवं अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। इसके अलावा बिना किसी तकनीकी उपकरणों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने हेतु संभावित गतिविधियों तथा परामर्श एवं मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराया जा रहा है। किंतु अभी भी ऑनलाइन शिक्षा देश के सभी बच्चों एवं कई सुदूर क्षेत्रों तक सुगम नहीं हो पाई है। परंतु शिक्षा को देश के सभी बच्चों एवं स्थानों तक पहुँचाना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण चुनौती है। इसी तरह के अनेक शैक्षिक सरोकारों पर आधारित लेखों एवं शोध पत्रों को यह अंक प्रस्तुत करता है।

बच्चों को केवल खेलना और उन्हीं खेलों से सीखना अच्छा लगता है। इसी स्वभाव को लेख 'निरक्षर बच्चों की खेल गीतों के माध्यम से खुलती पठन की दुनिया—एक अनुभवपरक सीख' में प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में लेखिका ने बच्चों के सीखने-सिखाने में गीतों एवं कविताओं को आधार बनाया है। किंतु वर्तमान समय में खेलों एवं गीतों से भरे इस माहौल तक बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करना एक कठिन कार्य है। वर्तमान में बच्चे विद्यालयों से दूर हैं और घर पर विद्यालय जैसा औपचारिक माहौल सृजित करना लगभग असंभव है। इसी संदर्भ को लेख 'लॉकडाउन और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई' में माता-पिता एवं अभिभावकों हेतु बच्चों को समझने एवं उनका मार्गदर्शन करने के कौशल पर चर्चा की गई है।

कोविड-19 महामारी ने शैक्षणिक क्षेत्र को किस प्रकार प्रभावित किया है, यह शोध पत्र 'दिल्ली के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और शिक्षकों पर लॉकडाउन के प्रभाव का अध्ययन' में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त शोध पत्र 'ऑनलाइन शिक्षण—अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की चुनौतियाँ तथा समाधान' सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा के कारण उत्पन्न होने वाली चुनौतियों तथा उनके संभावित समाधानों पर आधारित एक शोध पत्र है। वहीं, लेख 'कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका, चुनौतियाँ और भविष्य—एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' में ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती भूमिका, उसकी विशेषताएँ तथा इस क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों एवं उसके भविष्य पर प्रकाश डाला गया है।

© NCERT not to be republished

आदिकाल से ही मानव अपनी बातों को रंगों, रेखाओं, मुद्राओं, सुर, ताल, हाव-भावों से प्रदर्शित करता आ रहा है एवं आज भी अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को संजोए हुए है। अतः कला की एक विधा को लेख 'कला में रंगमंचीय स्वरूप द्वारा शिक्षण' में शिक्षा में रंगमंचीय प्रक्रियाओं के महत्व पर चर्चा की गई है। इसके साथ ही लेख 'कला समेकित विज्ञान शिक्षण—एक अनुभवपरक सीख' में विज्ञान शिक्षण-अधिगम हेतु कला के समेकित प्रयोग पर बल दिया गया है।

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षक में मूल योग्यताओं के साथ-साथ वचनबद्धता होना भी आवश्यक है। इस संदर्भ में शोध पत्र 'अध्यापन पेशे के प्रति शिक्षक-प्रशिक्षकों की वचनबद्धता एवं जवाबदेही' में निवास क्षेत्र, जेंडर, शिक्षण अनुभव व शिक्षण विषय, वचनबद्धता व जवाबदेही पर प्रभाव का अध्ययन दिया गया है। शोध पत्र 'शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन' दिया गया है।

समावेशी शिक्षा की संकल्पना पर विचार किया जाए तो यह 'सामान्यीकरण' की अवधारणा पर आधारित है। जिसे शोध पत्र 'सामान्यीकरण की अवधारणा एवं समावेशी शिक्षा' के अंतर्गत विभिन्न सिद्धांतों का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण कर प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा जनसाधारण की सहभागिता को व्यापक बनाने तथा व्यक्ति एवं समाज की समग्र गुणवत्ता के उन्नयन का एक प्रभावी उपकरण है। लेकिन विद्यालयों में ड्रॉपआउट की समस्या एक चिंता का विषय है। सामान्यतः मुस्लिम समुदाय में यह समस्या अधिक है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'मुस्लिम समुदाय के प्रतिभागियों की विद्यालय ड्रॉप-आउट की समस्याएँ एवं उनका परिप्रेक्ष्य' प्रस्तुत किया गया है।

डिजिटल दुनिया और उसके प्रभाव से जुड़े विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने तथा बच्चों के जीवन में डिजिटल मीडिया की भूमिका के बारे में कुछ बुनियादी सवालों पर चिंतन को लेख 'डिजिटल दुनिया और बच्चे— समकालीन परिदृश्य की सैद्धांतिक समझ' प्रस्तुत करता है। वहीं 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक' नामक लेख में शिक्षा के संदर्भ में शिक्षकों की महती भूमिका तथा शिक्षक शिक्षा के नए आयामों पर चर्चा की गई है।

विकास के वर्तमान स्वरूप में संचार माध्यमों ने इतनी तरक्की कर ली है कि बच्चों के पास सूचनाएँ प्रतिपल असीमित संख्या में पहुँच रही हैं। सभी सूचनाओं से परिचित होने की आकांक्षा में बच्चे पढ़ने एवं पढ़कर पूर्णतः समझने की स्थिति से लगातार दूर होते जा रहे हैं। इसी चिंतन पर आधारित पुस्तक समीक्षा *'पढ़ना, ज़रा सोचना—* शिक्षा में पढ़ने और सोचने की केंद्रीय भूमिका का समीक्षात्मक वर्णन' दी गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने अनुभव आधारित मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, क्षेत्र अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished